Research Paper

Volume : 3 | Issue : 8 | Aug 2014 • ISSN No 2277 - 8179

उत्तराखंड में मुक्त और दूरस्थ शिक्षाः उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण
(Open and Distance Education in Uttarakhand : Democratization of Higher Education)

Political Science

KEYWORDS : लोकतंत्र, मुक्त और दूरस्थ शिक्षा, परंपरागत उच्च शिक्षा व्यवस्था, पत्राचार ।

Dr.Surya Bhan Singh

Assistant Professor & Co-ordinator Dept. Of Political Science, Uttarakhand open University, Haldwani ,Nainital(263139)

ABSTRACT

किसी राष्ट्र की मजबूती के लिए यह आवश्यक है कि उसके नागरिकों को शिक्षा प्राप्त करने का पर्याप्त प्रबंध हो।हमारे देश में परंपरागत रूप से प्रचलित शिक्षा प्रणाली ऐसी है कि छात्र को शिक्षा के केन्द्र पर, कक्षा में उपस्थित होकर एक निश्चित पायठ्क्रम को शिक्षक के द्वारा पढाया जाता है।इस लिए आर्थिक संसाधनों की सीमाएं, उम्र की बाध्यता तथा विश्वविद्यालय और महाविद्यालय से दूरी साथ ही साथ बच्चियों और महिलाओं की सुरक्षा की समस्या आदि कारण ों से आबादी का एक बड़ा भाग उच्च शिक्षा से वंचित हो जाता रहा है। पर्वतीय और दुर्गम क्षेत्रों में तो यह समस्या और भी जटिल है ।
इन बाधाओं का निराकरण करते हुए उच्च शिक्षा में एक नई पद्धति की शुरूआत भारत में भी की गई। जिसे मुक्त और दूरस्थ शिक्षा कहते है।इसके द्वारा उक्त बाधाओं का निराकरण करते हुए जन–जन तक उच्च शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य किया जा रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में इस बात का अध्ययन किया जाएगा कि जिस प्रकार से लोकतंत्र समानता के आधार सरकार आप के द्वार के सिद्धांत पर कार्य करती है उसी प्रकार से उत्तराखंड में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय अपने अध्ययन केन्द्रों के द्वारा उच्च शिक्षा आप के द्वार के सिद्धांत पर कार्य करते हुए उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण कर रहा है ।

प्रस्तावना : किसी भी सभ्य समाज की पहचान, बहुत से तथ्यों से तय होती है। किन्तु उन सब में एक महत्वपूर्ण पक्ष है अपने सदस्यों को षिक्षा के अवसर किस स्तर तक प्रदान किया है। क्योंकि षिक्षा व्यक्ति के मानसिक पटल को पूर्वाग्रहों से मुक्त करते हुए, स्वतन्त्र चिन्तन के लिए तैयार करती है।जिससे व्यक्तित्व के विक. ास के अवसरों का विस्तार होता है।षिक्षा समस्याओं का समाधान कर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिषीलता की दर को तेज करती है, जिससे व्यक्ति समाज की मुख्य धारा में अपनी रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करते हुए न केवल वह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, वरन प्रदेष और देष के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे पाता है।इसी लिए किसी भी सभ्य समाज की पहचान उसके द्वारा अपने नागरिकों को प्रदान किये जाने वाले षिक्षा के अवसरों से है।विषेश रूप से उच्च षिक्षा के अवसरों से, क्योंकि उच्च षिक्षा के स्तर पर व्यक्ति को स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो पाता है।प्रस्तुत शोधपत्र में हम उच्च षिक्षा में वर्तमान समय में उभरती एक नई प्रणाली मुक्त और दूरस्थ षिक्षा पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगें और यह देखेगें कि किस प्रकार से यह उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय राज्य के दुर्गम क्षेत्रों के लिए मील का पत्थर साबित हो सकती है।परन्तु यह स्पश्ट करने से पहले हमें मुक्त और दूरस्थ षिक्षा को जानना होगा।इसके उपरांत हम देष में उच्च षिक्षा में मुक्त और दूरस्थ षिक्षा की दषा और दिषा देखते हुए अन्ततः उत्तराखण्ड में इसकी संभावनाओं को देखेंगे कि किस प्रकार से परंपरागत षिक्षा व्यवस्था की सीमाओं से पार जाते हुए यह पहाड. के सुदूर गाँवों में भी उच्च षिक्षा की संजीवनी का विस्तार कर सकती है।

मुक्त और दूरस्थ षिक्षा : मुक्त और दूरस्थ षिक्षा की स्पश्टता के लिए यह भी बताना आवष्यक है कि इस समय हमारे देष में तीन प्रकार की षिक्षा व्यवस्थाएं प्रचलित हैं,जो क्रमषः परंपरागत उच्च षिक्षा व्यवस्था, पत्राचार षिक्षा व्यवस्था और मुक्त एवं दूरस्थ षिक्षा व्यवस्था।परम्परागत षिक्षा व्यवस्था जिसमें एक प्रांगण की कक्षा में षिक्षक और छात्र एक दूसरे के आमने सामने होते है। जिसमें षिक्षक पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम को एक समय सीमा में पूर्ण करता है।इसमें षिक्षक के द्व ारा व्याख्यान या संवाद की षैली में षिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाता है।इसमें छात्र अपनी समस्या का समाधान षिक्षक से तुरन्त प्राप्त करता है।इस प्रकार से इस व्यवस्था में अध्ययन पूर्ण कालिक प्रक्रिया होती है जो षिक्षक पर बहुत कुछ निर्भर करती है।

एक दूसरी षिक्षा व्यवस्था है जिसमें षिक्षक छात्र परस्पर अन्तः क्रिया कक्षा में नहीं करते हैं ।वरन, छात्र केवल कुछ लिखित अध्ययन सामग्री प्राप्त करते हैं और उसी का अध्ययन करते हैं। इसमें उनकी समस्याओं के समाधान की कोई व्यवस्था नहीं होती है।

इन दो पद्धतियों कुछ विषेश कमियाँ दिखाई पड़ती है। परम्परागत षिक्षा व्यवस्था में तो उच्च षिक्षा सबकी पहुँच में नहीं होती है।उसके कई कारण हैं।सर्वप्रमुख कारण तो इसका पूर्णकालिक होना है।इसकी वजह से सूदूर गांव और सीमावर्ती क्षेत्रों के लोग उच्च षिक्षा से वंचित हो जाते हैं क्योंकि संसाधन की दृश्टि से वे पर्याप्त सक्षम नहीं होते, महिलाएं तो विषेश रूप से ,क्योंकि एक तरफ संसाधन की समस्या तो दूसरी तरफ उनकी सुरक्षा की समस्या।फिर राज्य के पास इतने संसाधन भी नहीं है कि उच्च षिक्षण संस्थाओं को गांवो तक खोल दिया जाए।साथ ही यह व्यवस्था सभी उम्र के लोंगो को यह अवसर नहीं प्रदान करती है।दूसरे षब्दों में स्थान और उम्र की सीमा समाज के बड़े हिस्से को उच्च षिक्षा से वंचित कर देती है।दूसरी षिक्षा प्रणाली पत्राचार की जिसमें छात्र की समस्या का समाधान करने की कोई व्यवस्था नहीं होती है।इस लिए यह व्यवस्था भी सक्रिय रूप से छात्र को नहीं जोड़ पाती है।

मुक्त और दूरस्थ षिक्षा :उच्च षिक्षा का लोकतंत्रीकरण : उक्त दोनों प्रकार की षिक्षा पद्धतियों की सीमाओं का निराकरण करने वाली नवीन षिक्षा व्यवस्था आज बहुत ही लोकप्रिय हो रही है वह है ''मुक्त और दूरस्थ षिक्षा''।इसमें सबसे पहले 'मुक्त' और 'दूरस्थ' के अर्थ को स्पश्ट करना आवष्यक है।मुक्त षिक्षा का तात्पर्य है स्थान और समय (उम्र) की सीमा को लाघते हुए समाज के उच्च षिक्षा से वंचित समुदाय को भी षिक्षा के अवसर देना।जो कि परंपरागत षिक्षण संस्थान नहीं दे सकते।इस प्रकार की सुविधा 'मुक्त और दूरस्थ षिक्षा संस्थाएं' अपने अध्ययन केन्द्रों और छात्र सहायक सेवाओं के द्वारा प्रदान करती है।ये अध्ययन केन्द्र गाँव–गाँव में भी खोले जा सकते हैं।इनके द्वारा छात्र को अध्ययन सामग्री के साथ विडिओ सी0डी0, ऑडिओ सी0डी0, वीडिओ कान्फ्रेन्सिंग और सत्रीय कार्य के मूल्यांकन के द्व ारा छात्र सीधे संस्था के विषेशज्ञ षिक्षकों से जुड़कर अपनी समस्या का समाधान पाता है।भारत में यह व्यवस्था लगभग 35 वर्श पहले ही प्रारम्भ हुई लेकिन इसकी पहुँच (सूदूर गाँवों तक), और इस तक पहुँच(किसी भी स्थान और उम्र के समाज के अक्षम ,वंचित समुदाय तथा महिलाओं को भी उच्च षिक्षा के अवसर प्रदान कर रही है) में सरलता और सहजता न इसे बहुत अच्छे मुकाम तक ले आया है।12वीं योजना के एक आंकड़े के अनुसार उच्च षिक्षा में पंजीकृत छात्रों में मुक्त और दूरस्थ षिक्षा पद्धति के तहत लगभग 17 प्रतिषत छात्र पंजीकृत है।

अब हम इसी क्रम में उत्तराखण्ड में मुक्त ओर दूरस्थ षिक्षा की संभावनाओं पर बात करते हैं। इसके पहले उत्तराखण्ड की भौगोलिक संरचना और आर्थिक संरचना की प्रकृति भी संक्षेप में देखना होगा।जिससे हमें यह स्पश्ट करने में सहायता मिलेगी कि किस प्रकार से यह उत्तराखण्ड के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है।भौगो. लिक दृश्टि से यह प्रदेष दुर्गम विभाजनों से युक्त है जिसकी अर्थव्यवस्था–काफी कुछ मनीआर्डर पर निर्भर करती है। पहाड़ पर महिलाएं घरेलू व्यवस्था की रीढ़ हैं।जिन्होनें उत्तराखण्ड के वर्तमान राजनीतिक आर्थिक ढ़ाचे को खड़ा करने में बहुत योगदान दिया लेकिन संसाधान की सीमितता के कारण सूदूरवर्ती गांव और आर्थिक रूप से अक्षम और वंचित समुदाय तथा मातृषक्ति उच्चषिक्षा के अमृतपान से वंचित हो जा रही है।ऐसे में 2005 में स्थापित उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय इनके गांवों तक अपने अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से 135 से अधिक कार्यक्रमों को संचालित कर उच्च षिक्षा की संजीवनी का पान स्थान और उम्र की सीमाओं से परे जाते हुए सुदूर के गावों में , समाज के वंचित समुदायों और मातृषक्ति को ''उच्चषिक्षा जन–जन के द्वार''के सिद्धान्त पर उच्च षिक्षा के अवसर प्रदान कर रही है।इन सभी को अवसर प्रदान कर यह उच्च षिक्षा के लोतन्त्रीकरण का कार्य कर रहा है।एक अध्ययन में यह पाया है कि प्रदेष के राजकीय महाविद्यालयों और वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में लगभग 157339 है।जिनमें राजकीय महाविद्यालयों में लगभग 99000 है।इसके सापेक्ष नवस्थापित ''उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय'(2005)' 2012–13 मे लगभग350 अध्ययन केन्द्रों,, 8 क्षेत्रीय केन्द्रों और 130 से अधिक कार्यक्रमों के साथ पंजीकृत छात्रों की संख्या लगभग 23000 है।जो राज. कीय महाविद्यालयों का लगभग 23 प्रतिषत है। इस प्रकार उत्तराखण्ड जैसे प्राकृतिक दृश्टि से दुर्गम विभाजनों से युक्त प्रदेष में उच्च षिक्षा के लिए मुक्त और दूरस्थ षिक्षा प्रणाली व्यापक संभावनाओं से भरा है क्यों कि अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से जहाँ अपने आस–पास उच्च षिक्षा से जुड़ने का अवसर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय प्रदान कर रहा है, तो 2012–13 सत्र में 52 परीक्षा केन्द्रों पर सफलतापूर्वक परीक्षा कार्य सम्पन्न कर आगे आने वाले समय में अपनी पहुँच, विस्तार और गुणवत्ता के कारण प्रदेष की उच्च षिक्षा में रचनात्मक योगदान दे सकता है।इसी लिए इस विशय पर षोध की आवष्यकता है जिससे कि अब तक उच्च षिक्षा से वंचित जन सामान्य को सामान रूप से उच्च षिक्षा के अवसर देने की संभावनाओं का अध्ययन किया जा सके द्य संक्षेप में यह भी जानना आवष्यक है कि यह किस प्रकार से उच्च षिक्षा का लोकतंत्रीकरण करेगा चूंकि लोकतंत्र में सरकार को चुनने और उसका भाग बनने का सबको समान अधिकार होता है,विना भेद भाव के लोकतंत्र 'सरकार आप के द्वार' के सिद्धांत पर कार्य करती है क्यों कि वह जनता।उसी प्रकार से उच्च षिक्षा में मुक्त और दूरस्थ षिक्षा "उच्च षिक्षा आप के द्वार सिद्धांत

"पर कार्य करती है ,जो समय ,स्थान और उम्र आदि की सीमाओं से मुक्त भाव से अपने अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से कार्य करती है।इसी लिए इस पक्ष की महत्ता को देखते हुए इस विशय पर षोध कार्य को आगे बढाने की आवष्यकता महसूस हुई है।क्योंकि अभी तक इस विशय पर कोई षोध कार्य नहीं किया गया है ।

निश्कर्श – उपरोक्त अध्ययन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि उच्च षिक्षा में परम्परागत षिक्षा व्यवस्था में, छात्र और षिक्षक को आमने सामने, एक कक्षा में, एक निष्चित पाठ्यक्रम का अध्ययन करते हैं ।जिसमें छात्र की समस्या का निराकरण तुरंत संभव होता है।जिसमें छात्र की सम्बन्धित अन्य समस्याओं का निराकरण तत्काल षिक्षक के सहयोग से संभव हो जाता है।परन्तु इस तरह की प्रणाली की अपनी कुछ सीमाएं हैं। जिनकी वजह से यह जनसामान्य के लिए सुलभ नहीं हो पाता है।क्यों कि इसमें आमने सामने कक्षा में ही षिक्षा संभव है।इस लिए दूरस्थ क्षेत्रो में रहने वाले लोग, घरेलू महिलाएं, सुरक्षा की समस्या के कारण बच्चियां, और जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक न हो वे आजीविका के लिए, रोजगार कमाने वाले बड़ी उम्र के लोग आदि इस प्रकार से ,ये सभी उच्च षिक्षा प्राप्त करने के अवसर से वंचित हो जाते हैं ।जबकि किसी भी राश्ट्र की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने नागरिको विना भेदभाव के उच्च षिक्षा के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये ।इसलिए षासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि उच्च षिक्षा के अवसर सभी को समान रूप उपलब्ध कराये।इसी बात को ध्यान में रखते हुए परंपरागत षिक्षा व्यवस्था की सीमाओं का निराकरण करते हुए आयु, समय, स्थान की बाधाओं से पार दूरस्थ क्षेत्रो में भी तथा अन्य प्रकार से उच्च षिक्षा से वंचित लोंगो के लिए उत्तराखंड में उत्तराखंड मुक्त विषविद्यालय के द्वारा यह गुरूतर प्रयास किया जा रहा है ।षोधपत्र में अध्ययन में हमने यह पाया है किया मुक्त और दूरस्थ षिक्षा सैद्धान्तिक रूप से लोकतंत्र के नजदीक है।क्योंकि लोकतंत्र में प्रतियोगी राजनीतिक दलों की उपस्थिति में, नियतकालिक निश्पक्ष चुनाव के द्वारा, सरकार जनता के प्रति उत्तरदाई रहते हुए विना भेदभाव के, सरकार जनता के द्व ार सिद्धांत पर कार्य करती है ।उसी प्रकार से मुक्त और दूरस्थ षिक्षा पद्धति अपने अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से(जिनकी स्थापना उच्च षिक्षा से वंचित जनमानस की आवष्यकताओं को ध्यान में रखकर की जाती है) उच्च षिक्षा आप के द्व ार के सिद्धांत पर कार्य करती है । इस प्रकर यह उच्च शिक्षा का लोकतन्त्रीकरण है।उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य में इस गुरूतर दायित्व का निर्वहन उतराखंड मुक्त विश्वविद्यालय बड़ी ही सजगता से कर रहा है ।यद्यपि अभी इस दिषा में बहुत कुछ आगे भी करने की आवष्यकता है ।

REFERENCE

1.Student Iformation System of Uttarakhand Open University | 2.Web of Uttarakhand Higher Education Directorate | 3. Mannual on Open and Distance Education of STRIDE(IGNOU) |